RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 3 & 4, Vol. : 5,
July-December (2018), Joint Edition, Pages : 01 - 06
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

गौसिया[1] एवं प्रियंका सिंह[2]

1. एसोसिएट प्रोफेसर, एम0एड0 विभाग, बरेली कालेज, बरेली (उ0प्र0)
2. एम0एड0 छात्रा, बरेली कालेज, बरेली (उ0प्र0)

Received : 27/10/2018 *1st BPR* : 30/10/2018 *2nd BPR* : 12/11/2018 *Accepted* : 01/12/2018

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता को जानने हेतु किया गया है। अध्ययन हेतु बरेली जनपद के महाविद्यालयों में बी0एड0 व बी0टी0सी0 में अध्ययनरत् 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ0 यशवीर सिंह तथा डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'सांवेगिक परिपक्वता मापनी (EMS)' का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में बी0एड0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं से अधिक पायी गयी।

की–वर्ड : शिक्षा प्रशिक्षु, सांवेगिक परिपक्वता ।

प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण काल उसका विद्यार्थी जीवन होता है जो उसके भविष्य का आधार बनता है। अतः अभिभावकों तथा शिक्षकों का यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सांवेगिक विकास जितनी कम आयु से आरम्भ होगा उतना ही उनमें सकारात्मक व्यक्तित्व का उदय हो सकेगा। विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता के विकास में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि बालक अपना अधिकतर समय विद्यालय में ही व्यतीत करता है। विद्यालय का अनुशासित वातावरण और शिक्षकों का मार्गदर्शन बालक के संवेगों को सही दिशा में विकसित करता है। शिक्षक ही बालक के व्यवहार को इस प्रकार नियन्त्रित कर सकता है कि एक ओर जहाँ उनमें अवांछित संवेगों का उदय न हो, वहीं दूसरी ओर उनमें वांछित संवेगों का संचार हो सके, ताकि बालक सावेंगिक रूप से परिपक्व हो सकें। बालक को सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाने वाले शिक्षकों का भी सांवेगिक रूप से परिपक्व होना आवश्यक है। इस तथ्य से प्रेरित होकर शोधार्थी ने प्रस्तुत विषय को अपने अध्ययन हेतु चयनित किया क्योंकि वर्तमान में जो प्रशिक्षु बी0एड0 व बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है वही भविष्य के शिक्षक होंगे। अतः उनकी सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन करना आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय समाज में गुरू का सर्वोच्च स्थान है क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। शिक्षक के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है। सम्पूर्ण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया शिक्षक पर ही निर्भर होती है। यह शिक्षक के प्रभावशाली गुण या व्यक्तित्व का ही प्रभाव होता है। जो छात्रों के जीवन को ज्ञान से भर देता है। कुशल शिक्षकों के अभाव में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति संभव नहीं है। शिक्षक ही बालक की सांवेगिक परिपक्वता को नियन्त्रित करके उसका उचित विकास करता है। शिक्षकों के व्यवहार, व्यक्तित्व व शिक्षण विधियों आदि का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व व सांवेगिक परिपक्वता पर पड़ता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने अपने अध्ययन में भावी राष्ट्र निर्माताओं अर्थात् प्रशिक्षित हो रहे बी0एड0 व बी0टी0सी0 के प्रशिक्षुओं की सावेंगिक परिपक्वता के तुलनात्मक अध्ययन को अपने अध्ययन हेतु चयनित किया है। प्रस्तुत अध्ययन न केवल प्रशिक्षुओं के लिए बल्कि, समाज व राष्ट्र के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो सकेगा। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निश्चित ही बी0एड0 एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता को बढ़ाने के लिये महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत कर सकेंगे, साथ ही शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान भी प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता को बढ़ाने के लिये क्या कदम उठा सकते है। इस विषय में जानकारी हेतु मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु किया गया–

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 01-06, ISSN 2348 – 3318
गौसिया[1] एवं प्रियंका सिंह[2]
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

- बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी0एड0 व बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी0एड0 व बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी0एड0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी0टी0सी0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं की रचना की गयी–

- बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- बी0एड0 व बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- बी0एड0 व बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- बी0एड0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- बी0टी0सी0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन 'सर्वेक्षण विधि' को आधार मानकर किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन बरेली जनपद में किया गया है। अध्ययन हेतु बरेली जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत 100 बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं; 51 छात्र व 49 छात्राओं का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों सांवेगिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ0 यशवीर सिंह तथा डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'सांवेगिक परिपक्वता मापनी (EMS) का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में कुल 48 प्रश्न हैं।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक मान का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन का विश्लेषण निम्न चरणों में किया गया –

प्रथम परिकल्पना–

''बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।''

तालिका संख्या–1
बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

प्रशिक्षु	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
बी0एड0	50	90.66	19.94	3.71	0.01
बी0टी0सी0	50	120.24	51.44		

तालिका संख्या–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि समस्त बी0एड0 तथा बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 90.66 तथा 120.24 तथा मानक विचलन क्रमशः 19.94 तथा 51.44 है। दोनो समूहों के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रान्तिक मान 3.71 प्राप्त हुआ, जोकि सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः सांख्यिकीय आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी0एड0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता, बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता से अधिक पायी गयी।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 01-06, ISSN 2348 – 3318
गौसिया[1] एवं प्रियंका सिंह[2]
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

आकृति संख्या–1

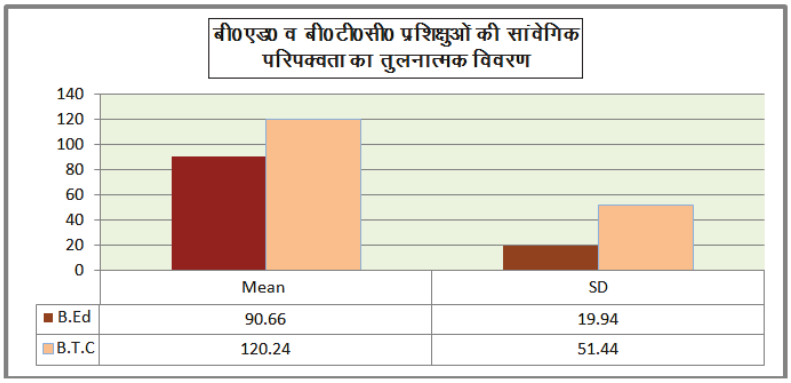

द्वितीय परिकल्पना – ''छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।''

तालिका संख्या–2
छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्मान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपान	सार्थकता स्तर
छात्र	51	118.29	49.79	3.25	0.01
छात्रायें	49	92.65	24.79		

तालिका संख्या–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बी0एड0 व बी0टी0सी के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 118.29 व 92.65 तथा मानक विचलन क्रमशः 49.79 व 24.79 है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक मान 3.25 प्राप्त हुआ, जोकि सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः सांख्यिकीय के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता, छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

आकृति संख्या–2

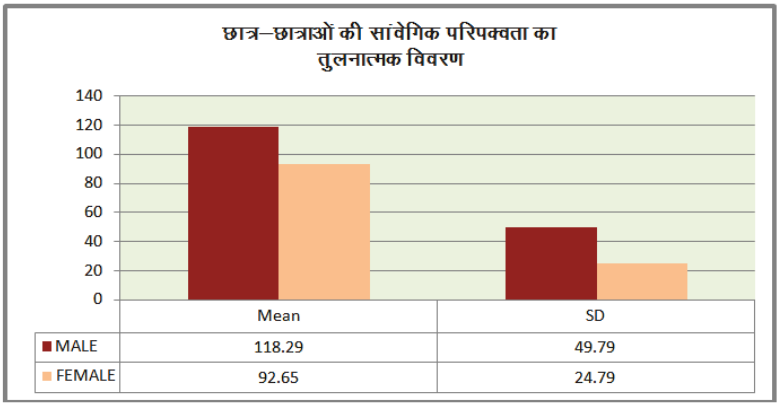

तृतीय परिकल्पना– ''बी0एड0 व बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका संख्या–3
बी0एड0 व बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

छात्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थक स्तर
बी0एड0	27	87.07	21.61	5.59	0.01
बी0टी0सी0	24	153.41	49.29		

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 01-06, ISSN 2348 – 3318
गौसिया[1] एवं प्रियंका सिंह[2]
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

तालिका संख्या–3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बी0एड0 व बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 87.07 व 153.41 तथा मानक विचलन क्रमशः 21.61 व 49.29 है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक मान 5.59 प्राप्त हुआ। जोकि सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः सांख्यिकीय आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी0एड0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता, बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

आकृति संख्या–3

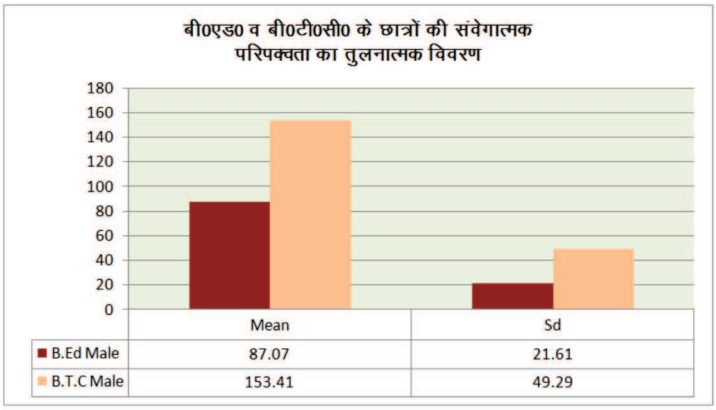

चतुर्थ परिकल्पना– ''बी0एड0 व बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।''

तालिका संख्या–4
बी0एड0 व बी.टी.सी की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

छात्रायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थक स्तर
बी0एड0	23	94.87	17.32	0.60	0.01
बी0टी0सी0	26	90.69	30.13		

तालिका संख्या–4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बी0एड0 व बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 94.87 व 90.69 तथा मानक विचलन क्रमशः 17.32 व 30.13 है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक मान 0.60 प्राप्त हुआ। अतः सांख्यिकीय आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी0एड0 तथा बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता समान पायी गयी।

आकृति संख्या–4

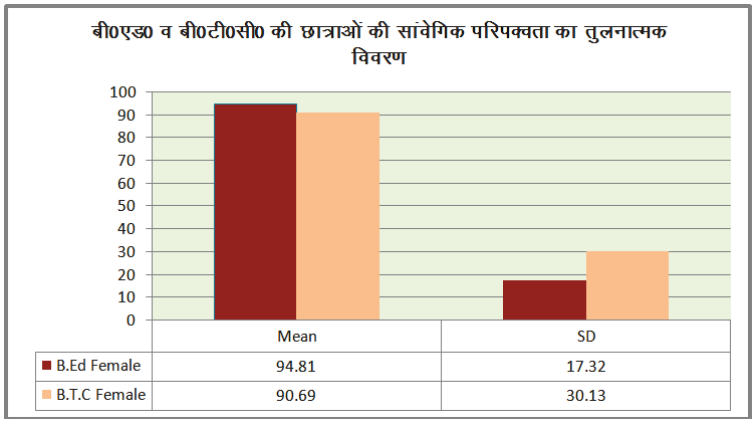

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 01-06, ISSN 2348 – 3318
गौसिया[1] एवं प्रियंका सिंह[2]
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पंचम परिकल्पना– ''बी0एड0 के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।''

तालिका संख्या–5
बी0एड0 के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बी0एड0	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थक स्तर
छात्र	27	87.07	21.61	1.41	0.01
छात्रायें	23	94.87	16.93		

तालिका संख्या–5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बी0एड0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 87.074 व 94.87 तथा मानक विचलन क्रमशः 21.61 व 16.93 है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक मान 1.41 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता के स्तर पर सार्थक नहीं हैं। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है। कि बी0एड0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता समान पायी गयी।

आकृति संख्या–5

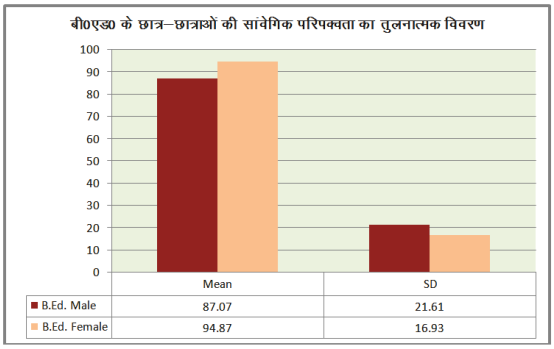

शश्टम परिकल्पना – ''बी0टी0सी0के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।''

तालिका संख्या–6
बी0टी0सी0 के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना

बी0टी0सी0	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
छात्र	24	152.58	49.39	5.03	0.01
छात्रायें	26	90.38	16.93		

तालिका संख्या–6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व बी0टी0सी0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 152.58 व 90.38 तथा मानक विचलन क्रमशः 49.39 व 16.93 है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक मान 5.03 प्राप्त हुआ, जोकि सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः सांख्यिकीय के आधार पर कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता, छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

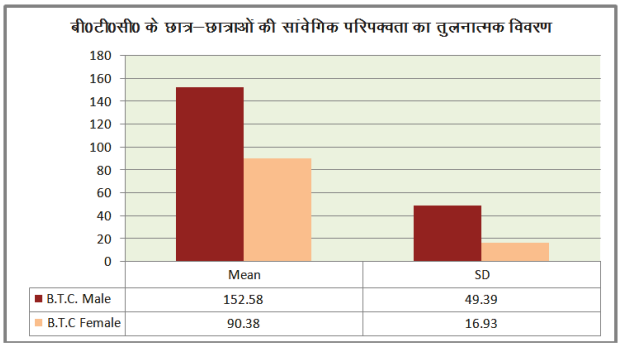

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 01-06, ISSN 2348 – 3318
गौसिया[1] एवं प्रियंका सिंह[2]
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

मुख्य निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से जो महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए, वे निम्नवत हैं–

- बी0एड0 व बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया। बी0एड0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता, बी0टी0सी0 प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता से अधिक पायी गयी।
- बी0एड0 व बी0टी0सी0 छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता, छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।
- बी0एड0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता, बी0टी0सी0 के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता की अपेक्षा अधिक पायी गयी।
- बी0एड0 तथा बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता समान पायी गयी।
- बी0एड0 के छात्र व छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता समान पायी गयी।
- बी0टी0सी0 की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता, छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम के आधार पर यह सुझाव दिया जा सकता है कि शिक्षक का स्वयं सांवेगिक रूप से परिपक्व होना आवश्यक है क्योंकि विद्यालयों में ही देश के भविष्य का निर्माण होता है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण की अवधि में ही शिक्षक प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता को बढ़ाने हेतु आवश्यक प्रयास किये जाने चाहिए। प्रशिक्षण संस्थानों में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे प्रशिक्षुओं की सांवेगिक परिपक्वता का विकास हो सके। प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षु के लिए योग, प्राणायाम, ध्यान आदि की कक्षाओं का प्रबन्ध करना चाहिए जिससे प्रशिक्षु तनाव से मुक्त होकर स्वस्थ्य रहें तथा अपने संवेगो पर नियन्त्रण रख सकें। प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रशिक्षुओं को सेमीनार, वर्कशॉप पर जाने की व्यवस्था भी करनी चाहिए जिससे प्रशिक्षुओं के संवेग सही दिशा की ओर अग्रसर हो सके।

सन्दर्भ सूची

- भटनागर, एस0 (2010) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
- बेस्ट एण्ड कॉन (2003) ''रिसर्च इन एजुकेशन'' प्रेन्टीस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
- बुच, एम0बी0 – I II III IV तथा V सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
- कौल, लोकेश (2009) ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'' विकास प्रकाशन, नोएडा।
- शर्मा, आर0ए0 (2011) ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'', आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
- सिंह, ए0के0 (2011) ''उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान'' पंचम संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
- सुलेमान, एम0 (2011) ''मनोविज्ञान शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी'' षष्ठम संस्करण, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।